चरम तीर्थंकर भगवान महावीर के २५०० वे निर्वाणोत्सव के उपलक्ष्यमें

# महावीर दर्शन MAHAVIRA DARSHAN

(भगवान महावीर का संक्षिप्त जीवन और संदेश)

## ABRIDGED LIFE AND MESSAGE OF BHAGAWAN MAHAVIRA


Prof: PRATAPKUMAR J. TOLIYA.
Smt. PAURAVI G. DESAI
Smt. KAILAS P. SANGANI

सहलेखक : श्रीमती पौरवी देसाई
श्रीमती कैलास संगाणी


श्रीमद् राजचंद्रजीकृत दर्शन के आधार पर प्रस्तुतकर्ता प्रा. प्रतापकुमार ज. टोलिया

***Some of V.B.I.F.'s Most Popular & Internationally-Acclaimed Compact Discs (C.D.S) & Audio-Video Cassettes by Prof. Toliya, Smt. Sumitra Toliya, Kum. Parul Toliya, Smt. Pauravi Desai & V.B. Choir***

(1) Atmasiddhi Shashtra (2) Apoorva Avsar (3) Raj Bhakti Pad (4) Rajpad (5) Sri Bhaktamar Stotra (6) Sri Kalyan Mandir Stotra (7) MAHAYOGI ANANDGHAN KE PAD (8) RATNATRAYA VRAT KATHA (9) Sonagir Ki Yatra & Dashlakshan Vrat Katha (10) MAHAVIR DARSHAN (11) Vir Vandana (12) Ishavasya Upanished (13) Om Tatsat (14) Anant Ki Anugoonj (15) Anandghan Pad-EP, (16) Jai Jinraj & Dadaguru Arati (17) Jineshwar Arati (18) Navkar & Gurudev Arati (19) Mahamantra Navkar (20) Shubh Manglik (21) Asra & Monghi Zindagi (22) Vividh Hindu Bhajan (All Discs and Cassettes) OTHER IMPT. CASSETTES : (23) Atmakhoj (24) Dhoon Aur Dhyana (25) Dhyan Sangit : Music for Meditation (26) Ahimsa Gan (27) Brahmagulal Muni Katha (28) Barah Bhavana-Parmanand Stotra (29) Brihat Shanti-Grah Shanti (30) Chhah Dhala (31) Dadaguru Darshan (32) Divakar Darshan (33) Geets & Ghazals (34) Gramya Jeevan - Guj Lok Geet (35) Ishopnishad-Om Tatsat (36) Jai Jinesh (37) Jinendra Darshan (38) Jin Vandana (39) Jain Bhajans : H/G (40) Jainism Abroad (41) Jain Suprabhatam (42) Karnataka Darshan (43) Kannada Folk Songs (44) Kannada Jain Devotional songs (45) Kahat Kabira (46) Kalpasutra Set - 10 CSTS (47) Meera ke Bhakti Pad (48) Maha Porabhavik Navsmaran (49) Musical Performances in U.S.A. (50) Meri Bhavna; Anubhav Vani (51) Prabhat Mangal (52) Rajul.

Also Paramguru Pravachan Cassette Sets in Y.Y. Sri Sahajanand Ghanji'sVoice : 50 Cassettes' Set, and Many other Audio & Video Cassettes.

भगवान महावीर के २६०० वे जन्म कल्याणक एवं श्रीमद् राजचंद्रजी परम समाधि शताब्दी के अवसर पर

# महावीर दर्शन

तीर्थंकर भगवान महावीर का संक्षिप्त जीवन और संदेश : गीत-कथा के रूप में : विश्व-विश्रुत लोंगप्ले रिकार्ड कैसेट एवं सी.डी. के विविध श्राव्य प्रकारों से वर्धमान भारती इन्टरनैशनल फाउन्डेशन द्वारा प्रस्तुत भ.म . २५०० वे निर्वाणोत्सव 1974 से लेकर भ.म. 2600 वे जन्म कल्याणक महोत्सव 2001 तक।

लेखन, निर्देशन, कथन, गान : प्रा. प्रतापकुमार टोलिया, स्व.कु. पारुल टोलिया एवं बहनें, श्रीमती पौरवी देमाई एवं व.भा. कलावृंद, श्रीमती कैलास सांगाणी के स्वरों में। मह-संगीत निर्देशन : श्री नवीन शाह।

Internationally-acclaimed L.P., C.D. and Cassette of V.B.I.F.

***MAHAVIRA DARSHAN***

(English/Hindi)

Illustrative Abridged life & Message of magnificent Master-Teacher of World - Tirthankar Bhagawan Mahavira.
Based on KALPASUTRA, concept of SRIMAD RAJCHANDRAJI and Lyrics of SRI SHANTILAL SHAH.

By :

***Prof. Pratapkumar J. Toliya.***

***Kum. Parul P. Toliya.***

Smt. Pauravi Desai, V.B. Choir, Co-Music Direction : Sri Navin Shah.

© Vardhaman Bharati International Foundation

12, Cambridge Road, BANGALORE - 560008 & Prabhat Complex, K.G. Road, BANGALORE-560 009

वर्धमान भारती इन्टरनैशनल फाउन्डेशन, बेंगलोर प्रस्तुत एल.पी., सी.डी., कैसेट

**" महावीर दर्शन "**

श्री कल्पसूत्र, श्रीमद् राजचंद्रजी की तत्वदृष्टि तथा काव्य कृतियाँ एवं श्री शांतिलाल शाह के गीतों पर आधारित

गीत-कथा : लेखन-निर्देशन-कथन-गान : प्रा. प्रतापकुमार ज. टोलिया

कल्याणपादपारामं श्रुतगंगा हिमाचलम् ।
विश्वाम्भोज रविं देवं वन्दे श्री ज्ञातनन्दनम् ॥

*(सूत्र-ध्वनि)* ***" जे एगं जाणइ, से सव्वं जाणइ ।"***

"जो 'एक' को - आत्मा को - जान लेता है, वह सब को, सारे जगत को जान लेता है ।"

*(मंत्र-ध्वनि)* ***ॐ नमो अरिहंताणं । नमो सिध्धाणं ।***
***नमो आयरियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्व साहूणं ।***
***एसो पंच नमुक्कारो । सव्व पावप्पणासणो ।***
***मङ्गलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलम् ॥***

(प्रवक्ता M) अनादिकाल से चला आ रहा है यह मंत्र - नमस्कार महामंत्र : व्यक्ति को नहीं, गुणों को पूजनेवाला विश्व-कल्याण का महामंत्र । अरिहंतपद सिध्धपद की पूजना के द्वारा स्वयं को अरिहंतपद-सिध्दपद-परमात्मपद दिलानेवाला महामंत्र ..... पंच-परमगुरुओं में निहित आत्म तत्व-केन्द्रित महामंत्र ।

(प्रवक्ता F) इस महामंत्र की आराधना, ध्यान-साधना एवं तदनुसार आचरणा - सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र की रत्नत्रयी उपासना - एक महान् आत्मा ने की थी : एक नहीं, दो नहीं, सत्ताइस सत्ताइस जागृत जन्मान्तरों में ... ।

(M) ... और इतनी सुदीर्घ साधना के पश्चात्, आज से ठीक 2600 वर्ष पहले, ईस्वी पूर्व (598) पांच सौ अठयानबे में

(F)... जाबूद्वीप के भरतक्षेत्र की कर्मभूमि, ... बिहार की संपन्न वैशाली नगरी, ... उसी का एक उपनगर क्षत्रियकुंड ग्राम और उसी में स्थित एक राजप्रासाद -

(M) तेईसवे जैन तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के धर्मावलंबी एवं लिच्छवी वंशी राजा सिध्धार्थ का यह राजमहल ... । यहाँ पर राजमाता त्रिशलादेवी की पवित्र कुक्षि में उस भव्यात्मा का देवलोक से अवतरण हुआ है - महामंगलकारी चौदह सर्वोत्तम सांकेतिक स्वप्नों के पूर्वदर्शन के साथ ।

(दिव्य वाद्य संगीत)

(Celestial Instrumental Music : Soormandal, Santoor)

(F) 'मति, श्रुत एवं अवधि' इन तीनों ज्ञान से युक्त यह भव्य करुणाशील आत्मा गर्भावस्था में भी अपनी माता की सुख-चिन्ता एवं सुख-कामना का संकल्प करती हुई नौ माह और साड़ेसात दिन पूरे करती है । .... वह दिन है - चैत की चांदनी की तेरहवीं तिथि : चैत्र शुक्ला त्रयोदशी ... । शुक्लपक्ष की इस चांदनी में शुक्ल ध्यान-आत्मध्यान-आत्मस्वरूप में खो जाने यह महान चेतना शरीर धारण करती है -

(Soormandal + Sitar : Musical Interlude)

(गीत) (सूरमंडल+सितार : वाद्य मध्यान्तर)

***"पच्चीस सौ बरसों पहले एक तेजराशि का जन्म हुआ ।***

***(नीनीनीनी सानी रे रे - । पप मपपरे सारेसानी - )***

***जुगजुग का अंधकार मिटाता, भारत भाग्य रवि चमका ॥***

*(सा ध धधध मगमपपप - । ध ध ध ध प। परेसारे नी )*

*"कोकिल मोर करे कलशोर, वायु बसन्ती बहता रहा,*

*क्षत्रियकुंड में माँ त्रिशला को पुत्र पवित्र का जन्म हुआ ॥"*

(F) राजा सिध्दार्थ और रानी त्रिशला के नंदन 'वर्धमान' के जन्म का यह आनंदोत्सव, यह "कल्याणक", सभी मनाते हैं - उधर मेरु पर्वत पर देवतागण और इधर धरतीलोक पर राजा सिध्दार्थ एवं उनके प्रजाजन (सूरमंडल)

(वृंदगान) (राग-बसंत बहार, केदार; ताल-त्रिताल)

*"घर घर में आनंद है छाया, घर घर में आनंद।*

*(सासामगप, पनीसारें, सां धध, धनीधप। पपपप प सांप, परेसा) (वाद्य-साजप)*

*त्रिशला मैया पुत्र प्रजटिया, जैसे पूनम का चंद ॥ घर घर में ॥*

*(पपप सां-सा। सांसांसां। नीरेसा। सांग रेमं गंरें। सां - ध प। सा- । म-रेसा।)*

*(सासामग। प-पनी सारें। सां-ध ध॥ धनी ध प। पपपप । प-सां-। )*

*(म- - ग। प-रे सा। सासामग। प -नी - सां ॥ )*

*"गोख गोख में दीप जले हैं, केसर कुमकुम रंग खिले हैं।*

*धरती के गूद अंतस्तल से, प्रसरित धूप सुगंध ... ॥ घर घर में ॥*

*"कुंज कुंज कोयलिया बोले, मस्तीमें मोरलिया डोले।*

*मंजुल कंठ से, मीठे स्वरसे, गावें विहग के वृंद ॥ घर घर में ॥* (सूरमंडल)

(M) - और इस महामंत्रलकारी जन्मकल्याणक के पश्चात् -

(गीत) (राग-मिश्र; ताल-दादरा)

(M) *"बाल को करती प्यार दुलार माँ, झुले की डोरी खींचती थी;*
*(धधध-नीसा नीसा / नीसानीधप / पपप धनी धप धनीनी नीनीनी)*
*सुर मधुर सुनाय सुनाय के, अंतस्-अमृत सींचती थी /*
*(रेरेरे ग्ररेसा / रेमम धपप - / गगग मधप मममम )*
*"वीर होना, गंभीर होना तू" पुत्र को आशिष देती थी;*
*(ध-पम ध ध ध / म प प प, ध ध ध नी सा सा / नी सासासासा)*
*झुकझुक के निज लाल के लोचन, नेह नजर से देखती थी //"*
*(रे रे रे ग्ररेसा रेमम ध पप - गगग मधप मममम* (2)

(०० ० ० ० वाद्यस्वर परिवर्तन ० ० ० ० ० )

(लोरी गीत) (राग-पहाड़ो छाया; ताल-दादरा)

(F) *"सो जा रे - सो जा / ... सो जा ... / ओ मेरे बाल / लाल /*
*मीठी मीठी लोरी सुनाऊं, मैं तो तेरे काज;*
*जाग्ने का शेष तुझे रे, सो जा रे तू आज / सो जा रे //"* (सूरमंडल)

(F) वर्धमान के जन्म से ही "श्री" एवं "आत्मश्री" का वर्धन, उनका विद्याशाला में गमन और अपने अलौकिक बाल-पराक्रम से 'वर्धमान' से 'महावीर' नामकरण : चल पड़ा यह क्रम -

(बाल वृंद गीत) (राग-भीमपलास ; ताल-दादरा)

*"ओ मैया! तेरे कुंवर की करनी क्या बात ?*
*ओ त्रिशला! तेरे कुंवर की कहनी क्या बात ?*
*सब से निराली उस की जात, भली है उस की भाँत,*

*ओ मैया! तेरे कुंवर की करनी क्या बात ?*
*"एक दिन सभी मिल के हम खेल खेलते थे,*
*सुख-दुःख के घाव, दाव संग झेलते थे।*
*निकला अचानक साँप एक महाकाय,*
*देखते ही सभी हम भागते चले जायँ,*
*बोलते हुए - 'बाप रे बाप !'*
*पर तेरे लाडले ने दौड़ पकड़ा उसे,*
*रस्सी समान फेंक छोड़ रक्खा उसे, पर काँपा न उसका हाथ।*
*ओ मैया! तेरे कुंवर की करनी क्या बात ?"*

(M) साँप बने हुए उस देवताने फिर थककर क्या किया ?
(भय-वाद्य : Horror Effects)

(गीत पंक्ति) ***"रूप पिशाच का लेकर देवता वीर को पीठ बिठाई दिये।***
***नन्हा-सा बहादुर बाल कुमार, उस देव को मुट्ठी लगाई दिये।"***

(F) साँप-पिशाच दैत्य और दूसरे प्रसंग में पागल हाथी - सभी को अपने बाल-पराक्रम से कुमार वर्धमान वश करते रहे ... (सूरमंडल)

(M) बाल-किशोर-कुमारावस्था बीत चुकी .... युवा आई .. भीतर से वे अलिप्त हैं परन्तु 'भोगावली' कर्म अभी अवशेष है, माता-पिता के प्रति भक्ति-कर्त्तव्य अभी शेष है, यशोदा का स्नेह-ऋण अभी बाकी है (सूरमंडल)

(F) और राजकुमार वर्धमान महावीर यशोदा का पाणिग्रहण करते हैं, उस से विवाह करते हैं। यद्यपि दूसरी मान्यतानुसार वे अविवाहित कुमार ही रहते हैं। ... इस गृहस्थाश्रम में, वैभवपूर्ण गृहस्थाश्रम में भी वे जीते हैं अपने उस जलकमल वत् जीवनादर्श के अनुसार -

(M) "जल में, कीच में जन्म लेकर भी जैसे जल से कमल अलिप्त (प्रतिध्वनि घोष) रहता है, वैसे ही संसार के बीच रहते हुए भी आत्मार्था को संसार-वासना से अलिप्त रहना है।" (सूरमंडल)

(F) इसी आदर्श के अनुसार भोग को रोग की भाँति भुगतकर, बीत रहे उनके गृहस्थाश्रम के दौरान उनके घर पुत्रीरत्न 'प्रियदर्शना' का खेलना और माता-पिंता का स्वर्ग सिधारना - इन सभी अनुकूल-प्रतिकूल घटनाओं में भी - महावीर का आत्मचिन्तन निरंतर चलता रहता है - (प्रतिध्वनि युक्त गीतपंक्ति) **"मैं कौन हूँ ? मैं कौन हूँ ? कोडहम् ? कोडहम् ? "मैं कौन हूँ ? आया कहाँ से ? क्या स्वरूप है मेरा सही ? मैं कौन हूँ ?"**

(F) - तीव्रता पकड़ते हुए इस आत्मचिन्तन के प्रत्युत्तर में उन्हें लंबे अर्से से पुकारती हुई वह आवाज (भीतर से) सुनाई देती है, वह आवाज, वह कि जिस में एक मांग है, एक बुलावा है, एक निमंत्रण है -
**(प्रतिध्वनि घोष) "जे एगं जाणई, से सव्वं जाणई।" जो एक को, आत्मा को जान लेता है, वह सब को, सारे जगत को जान लेता है ...। आ, और अपने आप को पहचान, अपने आप को पा ...। (सूरमंडल, दिव्यवाद्यवृंद)**

(F) और इसे सुन वे तड़प उठे हैं। इनकी छटापटाहट जाग उठी है। इस आवाज का वे जवाब देना चाहते हैं, अपने को खोजना और सदा के लिए पाना चाहते हैं -

(M) ना, वैशाली के राजमहल में अपनी इस आत्मा को पाया नहीं जा सकता .... ! (सूरमंडल)

(F) - और इस के लिए एक ही मार्ग था - "सर्वसंग परित्याग" .... भीतरी भावदशा से भरे इस वीरोचित सर्वसंत्र परित्याग के अवसर की ताक में वे तरसते रहे ..
(प्रतिध्वनि-गीत) (Echoing Song)

(M) ***"अपूर्व अवसर ... अपूर्व अवसर ऐसा आयेगा कभी ?***
***कब होंगे हम बाह्यांतर निर्ग्रंथ रे ?***
***सर्व सम्बन्ध का बन्धन तीक्ष्ण छेदकर,***
***कब विचरेंगे महत्पुरुष के पंथ रे ? अपूर्व अवसर।"***

(F) और आखिर आया वह दिन - अपने को पहचानने हेतु जाने का, सर्वसंग परित्याग के - महाभिनिष्क्रमण के - भागवती दीक्षा के 'अपूर्व अवसर' का .... । (सूरमंडल)

'पलायन' से नहीं, क्षमा समझौता और स्नेह से ली गई इस भागवती दीक्षा के समय ही जन्मजात तीन ज्ञानवाले वर्धमान महावीर को चौथा (मन वाले जीवों के मनोभावों को जाननेवाला) "मनःपर्यव ज्ञान" उत्पन्न हुआ और वे चल पड़े अपनी आत्मा को दिलानेवाले पंचम ज्ञान और पंचम गति मोक्ष को खोजने-अनंत, अज्ञात के आत्मपथ पर : एकाकी, अकेले, असंग ... । (सूरमंडल)

(गीत) ***"साँप की केंचुलि माफिक एक दिन, इस संसार का त्याग करे ।***
***राज प्रासादों में रहनेवाला, जंगल जंगल वास करें ॥"***

उनकी इस ह्रदयविदारक विदा की बेला, इस 'ज्ञातखंडवन' की धरा में खो जाते हुए उनको देखकर पत्नी यशोदा, पुत्री प्रियदर्शना एवं बंधु नंदीवर्धन के विरहवेदना से भरे विलाप-स्वर गूँज उठे -

(करुणतम गीत श्लोक) ***" त्वया विना वीर ! कथं व्रजामो ? गोष्ठिसुखं केन ... सहाचरामो ? ..."***

(M) " हे वीर ! अब हम आप के बिना शून्यवन के समान घर को कैसे जायँ ? हे बन्धु ! अब हमें गोष्ठि-सुख कैसे मिलेगा ? अब हम किस के साथ बैठकर भोजन करेंगे ?"

- लेकिन निर्ग्रंथ, निःसंग, निर्मोही महावीर तो चल पड़े हैं - प्रथम प्रस्थान से ही यह भीषण भीष्म-प्रतिज्ञा किए हुए कि

(M)(प्रतिध्वनि) **"बारह वर्ष तक, जब तक मुझे केवलज्ञान नहीं होगा, तब तक न तो शरीर की सेवा-सुश्रूषा करूंगा, न देव-मानव-तिर्यंच के उपसर्गों का विरोध-करूंगा, न मनमें किंचित् मात्र उद्वेग भी आने दूंगा ।"**

(F) यहीं से शुरु हो रही इन सभी भीषण प्रतिज्ञाओं की कसौटी-रूप उनकी साड़े बारह वर्ष की आत्म-केन्द्रित साधनायात्रा - जिसमें इन्द्र तक की सहाय प्रार्थना भी अस्वीकार कर के, और भी भीषण प्रतिज्ञाएँ जोड़ते हुए, वे आगे चले -

(सूरमंडल ध्वनि : मेघगर्जन, हिंसक प्राणी गर्जन, भयावह वन वातावरण ध्वनि)

गीत (शिवरंजनी + अन्य)

(M) **"धारे वनों में पैदल घूमे, (F) पैरों में लिए लाली (F) मान मिले, अपमान मिले या देवे भले कोई गाली।**
**(F) पंथ था उस का जंगल-झाड़ी कंकड़-कंटक वाला, कभी कभी या साथ में रहता मंखलीपुत्र गोशाला ।।"**
**(वन में निर्भययात्रा)**
(स्वरपरिवर्तन)

(M) **"आफत और उपसर्ग की सेना, पद पद उसे पुचकारती थी, आँधी-तूफाँ और मेघ-गर्जन से कुदरत भी-ललकारती थी ।।**

(M) **"घोर भयानक संकट के बीच आतम-साधना चलती थी। जहर हलाहल को पी जाकर, अंखियाँ अमृत झरती थीं ।।**

(F) **"प्रेम की पावन धारा निरंतर, पापी के पाप प्रक्षालती थी। मैत्री-करुणा की भावना उसकी, डूबते बेड़े उबारती थी ।।"** (करुणा-वेदना- करुण मुरली स्वर : दृढ अड़िगता के वज्र ध्वनि स्वर)

(M) **"चंडकोशी जैसे भोषण नाग को बुझाने वीर विहार करे। जहर भरे कई दंश दिये पर वे तो उस से प्यार करें ।।"**

दृढभूमि के पेढाल उद्यान में संगमक देव के छह माह तक बीस प्रकार के घोर भयंकर मरणांत उपसर्ग -
**"होश भुला एक ग्वाला भले ही, कानों में कीले मार चले।**
**आतम-भाव को जानने वाला, देह की ना परवाह करे ।। (शेरगर्जना)**

**देव और दानव, पशु और मानव, प्राणी उसे कई डँस रहे।**
**हँसते मुख से महावीर फिर भी, मंगल सब का चाह रहे ।।"**

(F) ऐसे घोर उपसर्गों और दुःखों से भरी लम्बी साधनायात्रा बाह्यांतर निर्ग्रन्थ पुरुषार्थी महावीर ने आत्मभावना में लीन होकर छोटी कर दी और आनंद से भर दी .... (वायब्रो-ध्वनि)

(F) जिस आत्मा को पहचानने और समग्रता में पाने के लिये वे चले थे, वह अब करीब करीब उनकी पहुँच के भीतर ही थी

(ध्वनिघोष) **"सच्चिदानंदी शुध्ध स्वरूपी, अविनाशी मैं आत्मा हूँ ।" "सच्चिदानंदी शुध्ध स्वरूपी, अविनाशी मैं आत्मा हूँ ।"**

(M) यह वही भाव था, वही ज्ञान का सागर था, जिसकी अतल गहराईयों से वे कष्ट-सहन के, क्षमा के एवं निरपेक्ष स्नेहकरुणा के अनमोल मोती ले आये थे - (सागरध्वनि)

(F) - अन्यथा ऐसे घोर कष्ट, परिषह और उपसर्ग कैसे सह सकते थे ?

(M) और फिर ध्यान-लीन महातपस्वी महावीर विहार करते करते कौशाली नगरी में पधारे, जहाँ प्रतीक्षा कर रही थी -

(F) चन्दनबाला ...

(M) - बड़ा अद्‌भुत है इतिहास इस राजकुमारी का, वैशाली नगरी में बेची गई एक नारी का ! ग्रंथ गवाह है - पांच माह पच्चीस दिन के उपवासी भविष्यदर्शी महावीर का यह अभिग्रह था कि (प्रतिध्वनि) **"जबतक एक उच्च कुल की फिर भी कर्मवश दासी बनी हुई, मुंडित केश, बंदी शरीर और रोती हुई आंखोवाली अबला हाथों में उड़द लिये भिक्षा देने द्वार पर प्रतीक्षा करती न मिले, तब तक वे किसीसे भिक्षा नहीं लेंगे ।"**

(F) वही नारी थी -

(F) (गीत) (राग-मिया मल्हार, मिश्र, बसन्त, त्रिताल) **"चन्दनबाला ! ..... तेरा अद्‌भुत है इतिहास ।"**

(M) **इस इतिहास के पृष्ठ पृष्ठ पर (F) प्रगटे दिव्य प्रकाश ... ।। चन्दनबाला ..... ।**

(F) **एक दिन थी तू राजकुमारी, राजमहल में बसनेवाली**
**दासी होकर बिक गई पर, बनती ना उदास .... ।। तेरा... चन्दनबाला ..... ।**
**दुःखों का कोई पार न आया, फिर भी अड़िग रही तुज काया ।**
**कर्म (काल) कसौटी करे भयंकर, फिर भी भई न निराश ।। तेरा... चन्दनबाला ..... ।**

(F) **वीर प्रभु को दे दी भिक्षा, प्रभु ने भावी में दे दी दीक्षा।**

(M) **श्रध्धा के दीपक से दिल में (F) कर दिया दिव्य प्रकाश ॥ तेरा... चन्दनबाला .....।**

(F) - और उन अनेक उपसर्गों की कतारों को पार करते करते ध्यानमस्त तपस्वी महावीर अपने निर्ग्रन्थ जीवन के साड़े बारह वर्षों के पश्चात् ... एक दिन .... आ पहुँचे अपनी उद्देश्य-सिध्धि, अंतिम आत्मसिध्धि के द्वार पर ... (दिव्य मंद ध्वनि : वायब्रो)

(M) (अति भावपूर्ण स्वर) वह ढ़लती दोपहरी ... वह जृम्भक ग्राम ... (शब्दचित्र) वह ऋजुवालुका नदी ... वह खेत की श्यामल धरती ... और वही शाल का वृक्ष ..... !

(F) इसी .... बस इसी वृक्ष के नीचे, गोदोहिका आसन में पराकोटी के शुक्ल ध्यान मे लीन निर्ग्रन्थ महावीर .... ! आत्मध्यान के इस सागर की गहराई में उन्हें यह स्पष्ट, पारदर्शी अनुभूति हो रही है कि -

(M) (प्रतिध्वनि) **" मैं इन सभी संगों से सर्वथा, सर्वप्रकार से भिन्न केवल चैतन्य स्वरूपी ज्ञाता-दृष्टा आत्मा हूँ : विशुध्द, स्वयंपूर्ण, असंग। मेरी यह परिशुध्ध आत्मा ही परमात्मा का स्वरूप है " - "अप्पा सो परमप्पा"।** (वाद्य-झंकार)

(गान-धून) **"सच्चिदानंदी शुध्ध स्वरूपी, अविनाशी मैं आत्मा हूँ।"**
**"भाते आतमभावना जीव पाये केवलज्ञान रे (2)"**
**"आतमभावना भावतां जीव लहे केवलज्ञान रे (2) "** (वाद्य ध्वनि)

(F) - और अपनी निःसंग आत्मा का यह ध्यान सिध्ध होते ही प्रस्फुटित होती है उनके वदन पर प्रफुल्ल प्रसन्नता .... और आत्मा में उस सर्वदर्शी, परिपूर्ण, पंचमज्ञान - केवलज्ञान और केवलदर्शन की ज्योति (दिव्य वाद्य संगीत .....)
(सूत्रघोष) **॥जे एगं जाणइ से सव्वं जाणइ ॥**

(M) निर्ग्रन्थ महावीर अब रागद्वेषादि की सब ग्रंथियों को सर्वथा भेदकर बन चुके हैं आत्मज्ञ, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, वीतराग, अरिहंत तीर्थंकर भगवंत ... उनके दर्शन और देशना - उपदेश - श्रवणार्थ -

(F) देवों के विमान उड़े, मानवों के समूह उमड़े, पशुओं के झुंड (वृंद) दौड़े, दिव्य समवसरण खड़े हुए, अष्ट प्रतिहारी सेवा

में चले, दिव्य-ध्वनि एवं देवदुन्दुभि के नाद गूँज उठे ....

(M) - और प्रभु ने अपनी देशना में प्रकाशित किया -

(प्रतिध्वनि) **"जीव क्या ? अजीव क्या ? आत्मा क्या, कर्म और कर्मफल क्या ? लोक क्या - अलोक क्या ? पुण्य-पाप क्या?सत्य असत्य क्या? आश्रव संवर क्या? बंध निर्जरा-मोक्ष क्या ?" "एगो मे सासओ अप्पा, नाण दंसण संजुओ ।" "सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोग लक्खणा ।।" ज्ञानदर्शन युक्त शाश्वत आत्मा ही एक मेरी है, बाकी तो सारे बाह्यभाव हैं, जो परस्थिति-जनित हैं ।"**

(F) - फिर तो लगातार ऐसे अनेक विषयों की अनेक देशनाओं के द्वारा, बहुतों को तारनेवाला उनका धर्म-तीर्थ-प्रवर्त्तन भारत की धरती पर अखंड चलता रहता है ।

(M) आचार में करुणा, अहिंसा, संयम, तप, दर्शन और चिंतन में स्याद्वाद-अनेकांतवाद एवं धर्म में सर्वविरति - देशविरति या पंच महाव्रत - बारह अणुव्रत से युक्त, निश्चय-व्यवहार के संतुलनवाले, सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्र के इस तत्कालीन और सर्वकालीन प्रवर्तनक्रम में चतुर्विध संघ बना ।

(F) उस समय के संघ में साधुओं में प्रधान थे गणधर गौतम स्वामी, साध्वियों में आर्या चन्दनबाला, श्रावकों में आनंदादि एवं श्राविकाओं में रेवती, सुलसा इत्यादि विदुषियाँ ।

(M) उस युग की, देश और काल की, धर्म और समाज की समस्याएँ थीं -

(F) ब्राह्मण-शूद्र, जाति-पाँति - (M) ऊंच-नीच और पीडित नारी -

(F) दम्भ, पाखंड, हिंसा, पशुबलि - (M) अंधाग्रह और झूठ की जाली -

(F) थोथे क्रियाकांड और जड़भक्ति -

(M) संक्षेप में, बाहरी पुद्गल पदार्थों में आत्मबुध्धि !

(F) भगवान महावीर के पास इन सभी समस्याओं का समाधान था, सभी रोगों का उपचार था, सभी के प्रश्नों का जवाब था

(गीत) (F) **"गौतम जैसे पंडितों को सत्यपंथ बतलाया।**
**श्रेणिक जैसे नृपतियों को धर्म का मर्म सुनाया॥**
**रोहिणी जैसे चोर कुटिलों को मुक्ति का मार्ग दीखाया,**
**मेघकुमार समान युवान को जीवन मंत्र सीखाया"**
**( ० ० ० ० ० वाद्य संगीत ० ० ० ० ०)**

(गीत) (M) **"एक दिन पूर्व का शिष्य गोशालक, प्रभु को देता गाली।**
**मैं सर्वज्ञ महावीर जैसा - कह के चली चाल काली॥**
**तेजोलेश्या छोड़ के उसने चेताई आग की ज्वाला;**
**वीर के बदले खुद ही उस में जलने लगा गोशाला॥"** (सूरमंडल)

(F) - गंगा के निर्मल नीर जैसी उनकी वाणी में अपूर्व संमोहन था, जादु था, अमृत था, अनंत सत्य का भावबोध था -

(गीत) (राग केदार) **"अनंत अनंत भाव भेद से भरी जो भली, अनंत अनंत नय निक्षेप से व्याख्यानित है।**
**सकल जगत हित कारिणी हारिणी मोह, तारिणी भवाब्धि मोक्षचारिणी प्रमाणित है॥"**
(०००००० वाद्य संगीत परिवर्तन ०००००)

(गीत) **"गंगा के निर्मल नीर-सरिखी, पावनकारी वाणी (बानी); घोर हिंसा की जलती आग में, छिटके शीतल पानी**
**।उनके चरन में आकर झुके, कुछ राजा कुछ रानी; शेर और बकरी वैर भुलाकर, संग करे मिजबानी॥"**(सूरमंडल)

(F) कहते हैं - तीर्थंकर भगवान महावीर की यह धीर-गंभीर, मधुर -मंगल, मृदुल-मंजुल सरिता-सी वाक्-सरस्वती राग मालकौंस में बहती थी (वृंदगीत) (राग-मालकौंस; ताल-त्रिताल) (पूर्व वाद्य-वादन, पश्चात् गान)

**"मधुर राग मालकौंस में बहती तीर्थंकर की बानी।**
**मानव को नवजीवन देती तीर्थंकर की बानी॥ दिव्यध्वनि ॐ कारी॥**

**धीर गम्भीर सुरों में सोहे, सुरवर मुनिवर सब कोई मोहे ।**
**शब्द शब्द पर होती प्रकट जहाँ, स्नेह गंग कल्याणी ।। मधुर०।।**

**वादी षड़ज, मध्यम संवादी बात नहीं कोई विषम विवादी ।**
**सादी भाषा, शब्द सरलता; सबने समझी - मानी ।। मधुर०।।**

**'सा ग म ध नि सा - नि सा' की सरगम, चाहे जग का मंगल हरदम ।**
**पत्थर के दिल को भी पलमें; करती पानी ... पानी ...! ।। ।।मधुर०।।"**

******

***"तेरी वाणी जगकल्याणी, प्रखर सत्य की धारा ।***
***खंड खंड हो गई दम्भ की, अंधाग्रह की कारा ।।"***

******

(F) इस अनंत महिमामयी जगकल्याणी वाग्-गंगा को केवलज्ञान के बाद तीस वर्ष तक निरंतर बहाते हुए और चतुर्विध धर्म को सुदृढ़ बनाते हुए अरिहंत भगवंत महावीर ने अपने ज्ञान से जब -

(गीतपंक्ति) **"जान लिया कि जीवनयात्रा होने आई अब पूरी ।**
**विहार का कर अंत प्रभुजी, आय बसे पावापुरी .... ।।"**

(M) (अतिभावमय) वह अलौकिक समवसरण ....! वह अभूतपूर्व, अखंड, अंतिम देशना ....!! ... और अमावास्या की वह अंतिम रात्रि ...!!! (गम्भीर शांत मृदल वाद्य संगीत ध्वनि)

(F) .... सोलह प्रहर, अड़तालीस घंटे, दो दिन-रात अखंड बहने के बाद, अचानक (प्रतिध्वनि) .... पूर्ण होने लगी प्रभु की वह अखंड बहती वाग् धारा.. पर्यंकासन में स्थिर हुई उनकी स्थूल औदारिक काया ... मन-वचन-शरीर के व्यापारों का उत्सर्ग किया गया ... अवशिष्ट अघाती कर्मों का सम्पूर्ण क्षय किया गया .. सभी क्रियाओं का उच्छेद किया गया ... और (Base Voice) ... सभी अंगों और संगों को भेद कर प्राणों को विशुध्ध सिध्धात्मा की निष्क्रीय, निष्कम्प,

निस्पन्द, नीरव और मेरु-सी अडोल अवस्था तक पहुँचाया गया ... (Pathetic Base)

(F) - जब कि एक शब्दहीन घोष उठा :-

(M) (प्रतिध्वनि पूर्ण, स्पष्ट) **"यः सिध्द परमात्मा, स एवाऽहम् ।" "जो सिध्द परमात्मा है वही मैं हूँ ... ।"**

(वाद्यसंगीत : करुणतम) - और प्रभु परमशांति, परमपद, परिनिर्वाण को प्राप्त हो गये ! (वाद्य)

(गीत) **"साँस की अंतिम डोर तक रखी, अखंड देशना जारी । आसो अमावस रात की बेला, निर्वाण की गति धारी ।।"**
(वाद्य संगीत)(धून) (घोषयुक्त) **"परमगुरु निर्ग्रन्थ सर्वज्ञ देव "**

(M) (भावपूर्ण) हवामें शंख, वनमें दुन्दुभि और जन-मन में रुदन के अनगिनत स्वर उठे .... प्राणज्योति अनंत ज्योति में विलीन हो गई ... ज्योत में ज्योत मिल गई ... प्रभु अनंतदर्शन, अनंतज्ञान, अनंतवीर्य, अनंत सुखमय, अजर अमर सिध्दलोक के ऐसे आलोक में पहुंच गये कि जहां से कभी लौटना नहीं होता, कभी जन्म-मृत्यु के चक्र में आना नहीं पड़ता -

**(F+M)** (गीत)**"या कारण मिथ्यात्व दियो तज क्युं कर देह धरेंगे ? अब हम अमर भये न मरेंगे ।"**

**(F) "इस अंधेरी अमा-निशा को बुझ गई महान ज्योति, धरती पर तब छाया अंधेरा, अंखियाँ रह गईं रोती ।। "**

**गूँज उठे तब देव दुन्दुभि, लहराई दैवी वाणी : "आनन्द मनाओ ! जग के लोगों । प्रभु ने मुक्ति पाई ।"**

(F) - प्रभुद्वारा प्रतिबोध कार्य को प्रेषित उनके प्रधान शिष्य गणधर गौतम स्वामी प्रभु की मुक्ति के बाद जब लौटे तब यह जानकर मोह-राग वश वे टूट पड़े और फूट फूट कर रो उठे -

**(M) (गौतम विलाप स्वर) (करुणतम गम्भीर ध्वनि में) "आप प्रभु निर्वाण गये, रहत नहीं अब धीर हिया । मुझे अकेला छोड़ गये, अब कौन जलाये आत्म दिया ?"**

(F) .... पर रोते हुए विरही गौतम को यकायक स्मृति में सुनाई दी भगवन्त की वह अप्रमत आज्ञा -

(M) **"समयं गोयम् । मा पमायए ... । पलभर का भी प्रमाद मत कर हे गौतम !"**

(प्रतिध्वनि) (F) - लौटे वे प्रमादपूर्ण आर्त्तध्यान से ... और तुरन्त ही हुआ उन्हें केवलज्ञान । (आनंदमय आनंदसंगीत ध्वनि)

(वृद गीतधून) **"वीर प्रभु का हुआ निर्वाण, गौतमस्वामी केवलज्ञान ।"**

***" भाते आरतम भावना जीव पाये केवलज्ञान रे (२)।"***

***" आरतम भावना भावतां जीव लहे केवलज्ञान रे (२) ।"***

०००००० (वाद्य संगीत) (नव अरुणोदय संकेत संगीत)

(M) - आज पच्चीस सौ वर्षों के पश्चात् (विहगवृंद ध्वनि, प्रभात संकेत) - आती है उस चिर महान आत्मा की - भगवान् महावीर की यह आवांज - (धोष) **"मित्ती मे सव्व भूएसु, वैरं मज्झं न केणई ।"** (सब से मेरी मैत्री, वैर नहीं किसी से)

***"शिवमस्तु सर्वजगतः परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः ।***
***दोषाः प्रयान्तु नाशम्, सर्वत्र सुखी भवन्तु लोकाः ॥"***

(सर्व विश्वजीव सर्वत्र सर्वथा सुखी हों, अन्यों के उपकारक हों, सर्वजीवों के दोष नष्ट हों ।)

(M) आज गूँजती है - तीर्थंकर भगवंत महावीर के मंगलदर्शन की वह "वर्धमान भारती", वह जग-कल्याणी वाणी - (F) जम्बू-नन्दीश्वर के द्वीपों से, भरत-महाविदेह के क्षेत्रों से और मेरु-अष्टापद - हिमालय की चोटियों से - (M:घोष) **"जे एगं जाणइ, से सव्वं जाणइ ।** (वाद्य) **जो एक को, आत्मा को जान लेता है, वह सब को, सारे जगत को जान लेता है ।**

-वीरस्तुति -

**वीरः सर्व सुरासुरेन्द्र महितो, वीरं बुधा संश्रिताः ।**
**वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो, वीराय नित्यं नमः ॥**
**वीरात् तीर्थमिदं प्रवृत्त मतुलं, वीरस्य घोरं तपो ।**
**वीरे श्री, धृति, कीर्ति, कान्ति निचयः । श्री वीर भद्रं दिश ।**

**॥ ॐ शांति : शांति : शांति : ॥**

..... 'महावीर दर्शन' की यह अमरकृति वर्धमान भारती के एल.पी.,सी.डी., कैसेट - सभी में उपलब्ध।

VARDHAMAN BHARATI,
12, CAMBRIDGE ROAD, BANGALORE -560008 (Ph : 080-5300556, 080-6667882)
PRABHAT COMPLEX, K.G. ROAD, BANGALORE-560009 (Ph : 080 - 2251552)

(प्रकाशनार्थ आंशिक अर्थसहाय : श्री. अशोक मेहता, श्री. राजेन्द्र सिंगी, श्री ..... )

*" MAHAVIRA DARSHAN "*

*BY*

*PROF. PRATAPKUMAR J. TOLIYA*

*-: English version by :-*

***Late Kum. PARUL P. TOLIYA, M.A. Gold medalist, 7 awards-winner and writer of 7 books***

**" जे एगं जाणइ, से सव्वं जाणइ"**

"JE EGAM JANAI, SE SAVVAM JANAI"

HE WHO KNOWS THE SELF, THE SOUL, KNOWS ALL, THE ENTIRE WORLD.

"कल्याण पादपारामम्, श्रुतगंगा हिमाचलम् । विश्वाम्भोज रविं देवं, वन्दे श्री ज्ञातनन्दनम् ॥"

ॐ नमो अरिहंताणं नमो सिध्धाणं नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्व साहूणं ।

एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलम् ॥

(Shloka-mantra) KALYAN PADAPARAMAM... NAVKAR MANTRA

Aum NAMO ARIHANTANAM,
NAMO SIDDHANAM,
NAMO AYARIYANAM,
NAMO UVJJHAYANAM,
NAMO LOE SAVVA SAHUNAM,
ESO PANCH NAMUKKARO,
SAVVA PAVAPPANASANO
MANGALANAM CHA SAVVESIM
PADHAMAM HAVAI MANGALAM

The Namaskar Mahamantra, known to us from time immemorial, worships not individuals, but divine qualities inherent in them. This mantra prays for the well-being of the whole universe..

..... Based on this mantra, one great soul undertook penance and applied it to his life and to the pursuit of right vision, right knowledge and right conduct over a long span of 27 lifetimes.

A long penance later, 2,600 years ago in the year 598 B.C. .... In the mortal land of Jambudweep's Bharatakshetra and in the prosperous city of Vaishali in Bihar and its portion of Kshatriyakundagram, this divine soul prepares for its descent from devaloka, the land of Gods...

(Song) "PACHISASO BARSON PAHLE..."

Queen Mother Trishaladevi, wife of king Siddhartha of the Licchvi Vamsha, is soon to give birth to this great soul. Earlier she had witnessed 14 or 16 great and symbolic dreams.

This divine, compassionate soul, endowed with the Mati, Shruta and Avadhi Jnanas, cares for its mother's well-being even when in the womb. On the completion of 9 months and 7½ days on the 13th day of the Chaitra month, even as the moon sheds its soothing light on the mortal land, this soul takes human form, with the aim of immersing itself in Shukla Dhyana, meditation of the soul and the Self.

The celebration of Prince Vardhaman's birth is spread far and wide - on Mount Meru the Gods and on the earth King Siddhartha and his subjects .....

*" घर घर में आनन्द है छाया .... "*

(Song) "GHAR GHAR MEIN ANAND HAI CHHAYA"

This great event has added to the well-being of all. Happiness descends everywhere but the greatest joy is that of mother Trishala in caring for her son.....

*" बाल को करती प्यार दुलार माँ ...."*

(Song) "BAL KO KARTI PYAR-DULAR MAA"

After Vardhaman's birth, the royal family sees a tremendous increase in its wealth. He soon enters school and gets the name "Mahavir" due to his superhuman feats of courage -

*" अरे मैया ! तेरे कुंवर की करनी क्या बात ? "*

*" रूप पिशाच का लेकर देवता, वीर को पीठ बिठाई दिये ... ।"*

(Song) " O MAIYA! TERE KUNWAR KI ...."

"ROOP PISHACH KA..."

Thus childhood passed into adolescence and soon comes the youth. Mahavir's soul is above worldly attachments, but a few karmas, duties still remain to be fulfilled - these include his religious duty towards his parents and marriage to Yashoda.....

..... And prince Vardhaman Mahavir weds Yashoda. Though according to another version, he remains unmarried. But even as a Prosperous householder, Vardhaman remains detached, much in accordance with life's ideal. Just as the lotus

stays aloof from the water and slush in which it is born, so has the true seeker to keep away from worldly pleasures and attractions.

In this detatched state, Mahavir sees various incidents and changes taking place in his life : daughter Priyadarshana is born to him, but his parents leave him on their eternal voyage. These gains or losses, however, do not stop his philosophical deliberations, he ponders on his life's aim and as if in answer to these deliberations there arises within him a voice. The voice has a plea, a call, an invitation: "JE EGAM JANAI, SE SAVVAM JANAI". He who knows the soul, knows all. "Come, recognise and realise yourself". And his mental turmoil increases because he wants to answer this voice, he wishes to find his true self for ever..... But no, the atmosphere of Vaishali's Royal Palace is not the right one for this search.....

..... The only way out was the total renunciation of all attachments. So Mahavir waited for the right opportunity when he could follow his chosen path, which incidentally, was meant for the brave.

**" अपूर्व अवसर ऐसा आयेगा कभी ? "**

(Song) "APOORVA AVSAR AISA AYEGA KABHI ?"

..... The day finally dawned when he could break away from all bonds and start on the difficult path of Bhagwati Diksha (or initiation into monkhood). Mahavir embarked on the task of finding his true self, only after consultation with all concerned, with their permission and blessings, for he did not believe in escapism.....

.....On this auspicious day, to Mahavir's three-sided knowledge, was added a fourth dimension, the "MANAHPARYAVA-JNANA" (मनः पर्यवज्ञान) So on he went in search of the fifth knowledge of Keval Jnana (केवलज्ञान) and the fifth and ultimate position of Siddhahood.

The road was unknown, and limitless, he was alone, unaccompanied..... His departure was heart-rending moment for his wife Yashoda, daughter Priyadarshana and brother Nandivardhana. Watching him disappear among the bushes of the Gnatkhandavana, a desperate cry rose from them:-

**" त्वया विना वीर ! कथं व्रजामो ?"**

(Shloka:Couplet) "TVAYA VINA VEER, KATHAM VRAJAMO?"

"O Veer! How can we now return to a house bereft of your presence and voice ? O brother! who will now accompany us in life's different phases ? Who will we dine and talk with ?"

But Mahavir, the Nirgranth, the unattached, has already left, having vowed at the very first step not to care for his body, nor protect himself from the troubles given by God, men or devil, nor even allow the mind to be upset by anger till such a time as he attained the ultimate - kevala Jnana .....

even refused Lord Indra's offer for help:

" घोर वनो में पैदल घूमे .... "

(Song:Couplet) "GHOR VANOME PAIDAL GHOOME"

..... Vardhaman Mahavir endured the scores of extremely painful and terrifying physical sufferings without even feeling upset:

" होश भूला एक ग्वाला .... "

(Song:Couplet) "HOSH BHOOLA EK GWALA"

The suffering did not take away from Mahavir's zeal and the Nirgranth saint, determined as ever, immersed himself in meditation, thus shortening the long voyage and filling it with happiness. The goal which he set out to find, was now very much within his reach. He was pervaded by a feeling of "Satchidanandi shuddh swaroopi" that truthful joyous immortal and coveted state. From the depths of this ocean of knowledge he had brought out pearls of tolerance, forgiveness, love and affection. How else could he have accepted the various trying phases with much calm ?

Mahavir soon arrived in the city of Kaushambi, where awaiting him was Chandanbala. Strange is the story of this princess, a woman of high birth sold as a slave in the streets of Vaishali. The sacred texts tell us of the Lord's vow. Mahavir had been fasting for 5 months and 25 days, yet had vowed not to accept food unless given by a woman of royal bearing, forced by circumstances to become a servant maid. She would have to have a shaven head, chained body, tears in her eyes and black gram in her hands. Waiting at the door as per his requirements was Chandanbala -

" चंदनबाला ! तेरा अद्‌भुत है इतिहास .... "

(Song) "CHANDANBALA ! TERA ADBHUT HAI ITIHAS"

Surmounting all kinds of trials, Mahavir, the meditative great saint, completes 12 1/2 years of his "Nirgranth" life and reaches his destination of self-realisation.

.....The afternoon was drawing to a close, the hamlet of chiman on the banks of River Rijuvaluka, amidst the lush greenery of the fields and under the 'Shal' tree.....

Yes, it was right below this tree in the "Godohika" (गोदोहिका) position, immersed in "Shukla dhyana" of parakoti the highest state, dwelling in the depths of the ocean of self-meditation that Mahavir grew aware of an intense feeling of being aloof from all kinds of attachments, being "merely a conscious self, the knowing and seeing soul, Pure, completely self-sufficient, alone...."

" सच्चिदानंदी शुध्ध स्वरूपी, अविनाशी में आत्मा हूँ।"

(Dhoon:Couplet) "SACHCHIDANANDI SHUDDHA SWAROOPI"

AND AS THE KNOWLEDGE OF HIS SOUL'S achievement dawns on him, there appears a serene joyousness on his face, the light of the omnipotent, complete Panchamajnana, the Kevala-Jnana and Kevaladarshana - in his soul. Nirgrantha Mahavir, free from all bonds of love and hate has now become self-realised, omnipotent, omnipresent vitarag, Arihant, Tirthankar Bhagawant..... !

..... To have the holy glimpse of the lord and to hear the divine sermons & preachings, the clean celestial planes of the Devas flew, groups of human beings gathered and animals and birds flocked.....

The divine "Samosarana" (समवसरण) was formed, the "Ashta Pratiharis" (अष्टप्रतिहारी) present themselves in his services and the melody of the Devdundubhi (देवदुंदुभि) rent the air.

The lord explained to all the meaning of Jeeva, Ajeeva, Atma, Karma and its fruits, the difference between Loka and Aloka, good deeds and sins, Truth and untruth, Asarva Samvara and Bandh, Nirjara and Moksha.....

" एगो मे सासओ अप्पा"

(Shloka:Couplet) "EGO ME SASAO APPA"

A stream of such holy lectures on different subjects followed and many found solace through it. Thus his "Dharma-Teertha Pravartana" flowed ceaselessly through the land, it preached compassion, non-violence, self-control, penance and vision in action; anekantvad - syadvad in thought and the Sarvavirati, deshvirati vows in religion. Balanced by definition in behaviour, decorated by the right vision, right knowledge and right conduct, this all-pervasive "Pravartana" formed the Chaturvidha Sangha, the four fold religious order. Among the monks of this group, Gandhara Gautam Swami stood in the fore-front; among the nuns was Arya Chandanbala; among the "Shravakas" were Anand & others and among the Shravikas were Revati, Sulasa and a few other such scholarly women.

At that time several problems peculiar to the country, society and religion were: Division of people on the basis of caste, the high-caste brahmins and the low-caste sudras; exploitation of the women, hypocrisy, animal sacrifices and violence, rigidity, superstition, useless rituals and show of religiosity minus true devotion - in short, a materialistic attitude was to be found everywhere. Lord Mahavir had a solution to all these problems, a cure for all these illnesses, and an answer to all the questions:

" गौतम जैसे पंडितों को"

(Song:Couplet) "GAUTAM JAISE PANDITON KO"

His voice, crystal clear as the waters of the Gangas, had a unique attraction, a nectar sweetness and the colours of the infinite truth in it .....

" अनंत अनंत भाव"

(Song) "ANANT ANANT BHAV"

It is said that this calm, yet deep, sweet, Divine, Melodius and soft speech of the Lord, flowed in Raga Malkauns.....

" धीर गंभीर सूरो में सोहे (मालकौंस)"

(Song) "DHEER GAMBHIR ..... MALKAUNS"

For 30 years after Kevalajnana, he spread his preachings far and wide and strengthened his "Chaturvidha Sangha". When his self-knowledge told him that life of his physical frame, the body, was to a close, he came to Pavapuri.....

" जान लिया कि जीवनयात्रा"

(Song:Couplet) "JAN LIYA KI JEEVAN YATRA"

There was again the divine Samovasarana..., that stupendous non stop last discourse... and the light and night of the new moon..., 16 "praharasa", two days and 48 hours lapsed when, when suddenly..... that ceaseless flow of words came to a stop, his physical body firmed itself into Paryankasana, all activities of the mind, word and body ceased. The remaining "Aghati Karma" were totally demolished. The soul broke the walls of all attachments and contacts and entered a still, silent, mountain-like state of pure elation, when a voiceless echo rose... "I have reached the state of the realised paramatma". And the Lord attained the highest position (Panchama Pada), everlasting silence and Pari-Nirvana (salvation) :

" सांस की अंतिम डोर तक ...."

(Couplet) "SANS KI ANTIM DOR TAK"

The air echoes with the sound of the shell conch, the jungles with that of the trumpet and the sound of human minds with unaccountable notes of agony ... Light fused into light.....

..... The Lord reached that Land of endless vision, limitless knowledge, infinite strength, the Siddhaloka of total happiness and immortality, from where none returns to fall into the endless circle of life and death. His chief disciple, Ganadhara Gautam Swami, away on a duty assigned by the Lord, returned after the Lord's salvation. When he knew of it, he broke down and wept. Bonds of love, attachment, for the Lord, still tied him. But even through the tears, he heard the Lord's command: "समयं गोयम ! मा पमायए" "Do not waste even a second in endless musings, O Gautam !" So, Gautam pulled himself together, returned to calmness and immediately attained kevaljnana :

Today 2,500 years later, comes the all-caring voice, the Vardhaman Bharati of that eternal soul, Lord Mahavir; It echoes down the valley of Jambu Nandiswara over the regions of Bharat Mahavideha and above the peaks of Meru Himalaya Mountains.....

**"JE EGAM JANAI, SE SAVVAM JANAI"**

***Script: Prof. Pratapkumar Toliya***
Translation: (Hindi to English) : Kum. Parul Toliya


..... 'महावीर दर्शन' की यह अमरकृति वर्धमान भारती के एल.पी.,सी.डी., कैसेट - सभी में उपलब्ध।

*This immortal creation of 'MAHAVIR DARSHAN' available in L.P., C.D., Cassette forms, from :-*

VARDHAMAN BHARATI,
12, CAMBRIDGE ROAD, BANGALORE -560008 (Ph : 080-5300556, 080-6667882)
PRABHAT COMPLEX, K.G. ROAD, BANGALORE-560009 (Ph : 080 - 2251552)

(प्रकाशनार्थ आंशिक अर्थसहाय : श्री. अशोक मेहता, श्री. राजेन्द्र सिंगी, श्री ..... )

## SOME OF V.B.I.F.'S IMPORTANT PUBLICATIONS

**By Priyavadini : Late Kum. Parul P. Toliya M.A. Gold Medalist, Dip. Journalism.**

1. Why Abattoirs-Abolition? (English/Hindi) : On Non-Violent Movement against Staughter Houses.
2. Jainism Abroad (English) : Various aspects : Ancient & Current
3. Contribution of Jaina Art, Music, & Literature to Indian culture (English) Papers & Essays.
4. Musicians of India - 1 came Across : Interviews of Pt. Ravishankar and others.
5. Indian Music & Media (English) : Awarded Study paper.

*6. Mahavir Darshan (English) : Bhagavan Mahavir's Life & Message **Dr. Kum: Vandana P. Toliya**

*7. Why Vegetarianism ? (English) : A Scientific & Spiritual Study. **By. Prof. Pratapkumar Toliya, M.A. (Hindi, Eng.) Sahitya Ratna**

8. My Mystic Master Y.Y. Sri Sahaj Anandaghanji : Biography

*9. Dakshinapath Ki Sadhanayatra (Hindi/Gujrati) : Travelogue.

*10. Anant Ki Anugoonj, (Hindi) : Poems & Songs : G.O.I. Awarded

11. Mahasainik (Hindi) : On Mahatma Gandhi and Srimad Rajchandraji : A Play (Awarded)
12. Could there be such a warrior ? (English) : As per above.
13. Meditation & Jainism (English) : Cuttack Int. Seminar Paper.
14. Jab Murde Bhi Jagate Hain (Hindi) : Patriotic Play (Awarded)
15. Videshon me Jain Dharma Prabhavana (Hindi/Gujrati)
16. Sant-Shishyani Jeevan Sarita (Gujarati) : Biography.
17. Pragyachakshu-nu Drashti-Pradan (Gujarati) : Reminiscences
18. Sthita Prajna ke sang (Hindi/Gujarati) : Remi. with A. Vinobaji.
19. Days with Vinoba (English) : Reminiscences.
20. Gurudeo Ke Sath (Hindi) : Late Gurdial Mallikji on Tagore.
21. Jain Contribution to Kannada Literature & Culture (Eng/Hindi)

*22. Speeches & Talks in U.S.A. & U.K. (English/Gujarati)

23. Profiles of Parul (English) : Biography

*Audio and/or Video Cassettes of these titles are available.

(Only a few Books from these available now)

Mahavira Darshan Booklet **Price Rs 11-00**

Available from :-

**VARDHAMAN BHARATI INTERNATIONAL FOUNDATION**

12, Cambridge Road, Bangalore - 5600 008 (INDIA)

Phone (Off) 2251552 (Res.) 5300556 PRABHAT COMPLEX, K.G. ROAD, BANGALORE - 560 009

from VARDHAMAN BHARATI, BANGALORE, the Producers of "SRI BHAKTAMARA STOTRA", "ATMA-SIDDHI SHASHTRA" "VIR-VANDANA" and other spiritual LPS to commemorate the sacred occasion of BHAGAWAN MAHAVIRA'S 2500th NIRVANA CELEBRATIONS–1975 & 2600th BIRTH CELEBRATIONS - 2000.

# MAHAVIRA DARSHAN

**Abridged Life & Message of Bhagawan Mahavira**

Jain Spiritual, Hindi with Prakrit & Sanskrit

Also, English commentary version.

## महावीर दर्शन

(भगवान महावीर का तत्त्वदर्शन युक्त संगीतमय जीवन)

जे एगं जाणइ से सव्वं जाणाइ

"He knew everything who realised the soul"

**Mahavira-In the eyes of Jain Poets:**

"In whose knowledge both the conscious & unconscious sentiments are equally expressed, who is endless and is adored with the equanimity amidst varying sentiments of growth, steadiness & decay; who leads others like the sun-the witness of the world-along the path of the world shown by him – May such Bhagawan Mahavira Swamy be my guide on the path of my life."

-"MAHAVIRASHTAKA STOTRA" 1.

**Mahavira-In the eyes of Vedic Scriptures:**

"Ye worship Lord Mahavira, who is an ATITHI (ascetic) adorable, fasted for months and suffered the hardships of being naked, so that the three ignorance of SAMASYA (scepticism) VI PARYAYA (wrong knowledge) and ANADHYAVASAYA (indifference) and the MADAS (Intoxicants) of wealth power and knowledge may not arise." – "YAJURVEDA" XXX: 14

**Mahavira-In the eyes of Buddhist Scriptures:**

"Niggantha Nataputta (Mahavira) was all-knowing & all-seeing I endowed with unlimited knowledge & vision, who alone could declare that, whether he was walking or standing still, sleeping or awake, the unlimited knowledge and vision were constantly his – continuous and unperturbed."

- "MAJJHIMA NIKAYA". 92-93.

**The Omniscient-In the eyes of Omniscient Mahavira himself:**

"The Omniscient knows and **sees all objects,** no matter whether finite or infinite; the Omniscient knows **all,** and **sees all,** the Omniscient knows in all directions and sees in all directions, the Omniscient knows in all periods and in all respects, and he sees in all periods and in all respects. The omniscient has infinite knowledge and infinite vision. The omniscient has no cover on his knowledge, and no cover on his vision. It is for this, till very far."

-"The BHAGAVATI SUTRA": 5-4: 79-49 Tr. K.C. Lalwani.

**THIS CREATION...**

Depicted here is the life-story 5 philosophy of such an ominiscient world – teacher, the 24th Jain Tirthankara Bhagawan Mahavira, who transformed himself from manhood to Godhood by his rigorous and thrilling, unique "Sadhana." The whole presentation based on Bhagawan Mahavira's own philosophy as seen and simplified in the modern times by his worthy heir **Srimad Rajchandraji,** is produced here in chronological events of the glimpses of Bhagawan Mahavira's life in abridged form, just to present whatever possible within the limits of this one L.P.

**IMPORTANT GUIDELINE**

*KINDLY PLAY THIS DISC AT ANY TIME, BUT PREFERABLY IN THE SOLITUDE OF THE NIGHT OR EARLY MORNING HOURS... BURN AN AGARBATTI, TURN OFF THE LIGHTS, CLOSE YOUR EYES, LISTEN TO EVERY WORD AND SOUND AND YOU WILL FIND YOURSELF IN THE AGE & WORLD OF BHAGAWAN MAHAVIRA. AVOID LISTENING DURING MENSTURATION, WHILE SMOKING AND EATING AND, WHEN IN FLIPPANT MOOD.*

VANDANA

* NAMASKARA MAHA-MANTRA (PRAKRIT)
* MANGALAPATHA - MANGALIKA (PRAKRIT)
* MAHAVIRASHTAKA STOTRA (SANSKRIT) BY BHAGENDU, PRECEDED BY HINDI COMMENTARY.
* HE JYOTI PUNJ (HINDI) Adoring Lyric By UPADHYAYA AMAR MUNI
* SHLOKA & HINDI COMMENTARY PARAMATMA STOTRA (SANSKRIT) By Unknown Poet
* SHORT HINDI COMMENTARY & TRIBUTE song of VIR-VANDANA entitled HE VITARAG! HE VARDHAMAN! (Hindi Lyric in the Rabindra Sangeet style-Bhairavi) By PROF. PRATAPKUMAR J. TOLIYA

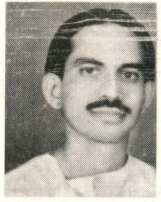

Script, Commentary, Spoken Word, Music Composition & Singing: **Prof. Pratapkumar J. Toliya** M.A. (Hindi); M.A. (Eng.) Sahitya Ratna, Radio Artiste & Exponent Of Meditational Music.

Accompanying Leading Voices: (Singing) **Smt. PAURAVI G. DESAI** M.A. (Guj), Radio &, TV artiste & devoted Singer of high repute with melodious voice.

Commentary '.
**Smt. KAILAS P. SANGANI**
Announcer, All India Radio, Bombay.
Music Direction
**Shri Navin Shah & Prof. Pratapkumar J.Toliya**

*"Copyright" Producers:*
**Vardhaman Bharati**
Academy of Music, Meditation, Literature, Philosophy, Jainology & Research,
12, Cambridge Road,
Bangalore-8. (India)

**Price Rs. 11/-** **ENG. / HINDI**

Designed & Printed : Kiran Enterprises, Bangalore. Ph. : 91-80-2264016